पिछले दो अंकों 'मौत का दूत' और 'अपने देश के दुश्मन' में आप पढ़ चुके हैं कि कैसे मौत का दूत नामक भयानक अपराधी बच्चों को अपंग करके व उन्हें डरा- धमका कर भीख, चोरी व अन्य अवैध एवं गैर कानूनी धंधा करवाता था और साथ ही उसके पीछे पड़े राम-रहीम। राम-रहीम को अपने मार्ग का कांटा समझ उसने कई बार उन्हें मरवा देना चाहा, लेकिन राम-रहीम हरबार बचते हुए बराबर उसकी खोज में लगे रहे। राम-रहीम को बुरी तरह अपने पीछे पड़ा देख आखिर मजबूर हो मौत के दूत को अपने कई धंधे बन्द कर देने पड़े, जबकिं तमाम मार्ग बन्द होने के बावजूद भी राम की योजनानुसार रहीम आखिरकार मौत के दूत के एक खास आदमी जे.के. को अपने विश्वास में ले लेने में सफल हो गया, जो उसे लेकर एक अनजानी हवेली में पहुंचा। फिर क्या हुआ—? जानने के लिए पढ़िये प्रस्तुत चित्रकथा—

जे.के. ने रहीम की आंखों से पट्टी उतार दी।
नया मेम्बर— तुम इसे अन्य नये छोकरों के केबिन में ले जाओ। इसकी भी जांच-पड़ताल करनी है।
ओ.के.!
लगता है, यही इनका गुप्त अड्डा है परन्तु मार्ग तो देख नहीं सका—राम को कैसे बता पाऊंगा!
वह व्यक्ति रहीम को लेकर एक तरफ चल पड़ा।
अब मुझे बॉस को इस नये छोकरे के विषय में खबर करनी चाहिये!
शाबाश! अच्छे बच्चों की तरह चुपचाप चलते रहो।
बेटा, वक्त आने पर मालूम पड़ेगा कि मैं कितना अच्छा हूं!

बदमाश रहीम को लेकर एक बड़े से कमरे में पहुंचा, जहां पांच-छः लड़के पहले से मौजूद थे।
लो छोकरो, तुम्हारा एक और नया दोस्त!
आओ-आओ मित्र, तुम्हारा स्वागत है।
हुर्रे-अब और मजा रहेगा!

तुम्हें यहां किसी किस्म की तकलीफ तो नहीं है छोकरो!
बिल्कुल भी नही उस्ताद!
शायद ये नये ही फंसे हैं इस दल में, जिनकी मेरी तरह ही जांच पड़ताल होनी है।

बदमाश के जाने के पश्चात्—
आओ मित्र, ताश के दो-दो हाथ हो जायें।
जरूर, लेकिन पहले मैं निवृत होना चाहता हूं!
रहीम ने राम से सम्पर्क स्थापित करने के लिये लैट्रिन जाने का बहाना किया।

इस तरफ, दाईं ओर, निश्चिंत होकर निबट आओ।
तब तक आपस में ही एक बाजी लगा लेते हैं!

लैट्रीन में पहुंच रहीम ने चारों तरफ से आश्वस्त हो दरवाजा बन्द किया, फिर कलाई से घड़ी उतारकर उसका पिछला हिस्सा खोल दिया। अब वह घड़ी रूपी एक शक्तिशाली ट्रांसमीटर था।

राम इस समय अपने घर में मौजूद था और रहीम के मैसेज का ही इंतजार कर रहा था।

फिर रहीम सारी बात बताने लगा। अन्त में वह बोला-

फिर राम ने उसे समझाते हुए कहा-

फिर रहीम ने सम्बंध विच्छेद कर घड़ी पूर्ववत कलाई में पहन ली।

और लैट्रीन में ऐसे ही पानी बहा कर रहीम बाहर निकल आया।

जब रहीम कमरे में वापस लौटा तो उसे वे लड़के ताश खेलने में व्यस्त दिखाई दिये।

फिर रहीम भी उनके साथ ताश खेलने में मगन हो गया।

उधर जे.के. ट्रांसमीटर पर अपने बॉस 'मौत के दूत' से कह रहा था-

लड़का धंधे में नया जरूर है बॉस, लेकिन काफी तेज मालूम पड़ता है! विश्वास है, जल्दी ही उस्तादी हासिल कर लेगा!

ठीक है, - लेकिन दल में शामिल करने से पहले उसके विषय में अच्छी तरह जानकारी हासिल कर लो, मैं किसी किस्म का खतरा मोल नहीं लेना चाहता।

अगले दिन जे.के. वेश बदलकर रहीम के विषय में छानबीन करने उसके बताये ठिकाने पर पहुंचा।

रहीम ने अपना नाम कालिया ही बताया था।
अरे बाबा, उस कम्बख्त का नाम न लो। पूरे मोहल्ले को उसने बदनाम कर रखा है।
क्यों-ऐसा क्या किया उसने?
राम ने वहां अपने आदमियों का पूरा जाल बिछाया हुआ था। वह व्यक्ति भी उसी का सिखाया हुआ था।

उस व्यक्ति ने उसे वही सब बातें बताईं, जो राम ने उसे सिखा-पढ़ा रखी थीं।
ओह! लेकिन अब वह कहां मिलेगा?
होगा किसी थाने में बन्द या हाथ-पैर तुड़वा-कर किसी अस्पताल में पड़ा होगा! कल से तो वह दिखाई नहीं पड़ा।

आवश्यक जानकारी प्राप्त करने के बाद—
अच्छा भाई मैं चलता हूं। तुम्हारी बड़ी मेहरबानी!
लेकिन बाबा, तुम कौन हो और उसके बारे में यह सब क्यों पूछ रहे हो?

मैं उसका दादा हूं, दो साल पहले वह घर से भाग गया था। बड़ी मुश्किल से खोजबीन करने के पश्चात् उसका यह पता मिला, लेकिन...।
अरे बाबा, ऐसे नपूते की फिक्र छोड़ो और लौट जाओ घर को-वरना वह तुम्हें भी अपनी तरह बदनाम कर देगा।

इसी तरह जे.के. आस-पास के और भी लोगों से मिला, सभी ने रहीम यानी कालिया के बारे में वही सब कुछ बताया।
अरे बाबा, हमसे क्या पूछते हो, उसके बारे में तो किसी थाने से पता करो।
यानी कालिया वास्तव में इस दुनिया में अकेला और बेकार है।
ओह!

अच्छी तरह छानबीन करने के पश्चात जे.के. संतुष्ट होकर वापस लौट पड़ा।
चल कर बॉस को खुशखबरी दूं।

उसके उस इलाके से जाने के पश्चात् जे.के. से मिलने वाले लोग एक कमरे में पहुंचे, जहां राम पहले से ही मौजूद था।
गुड!
वह सन्तुष्ट होकर चला गया है राम भइया!

उसे किसी प्रकार का संदेह तो नहीं हुआ?
बिल्कुल नहीं बेटे, हमने उसे अच्छी तरह वही समझाया जो तुमने कहा था।

शाबाश! लो, अब अपना-अपना इनाम सम्भालो।
जुग-जुग जियो बेटा।
धन्यवाद, राम भइया।

फिर राम उस इलाके से निकल कर मोटर साइकिल पर सवार हो चीफ से मिलने चल पड़ा।

चीफ को सारी बातों से अवगत कराना जरूरी है, अब किसी भी समय पुलिस फोर्स की सहायता की आवश्यकता पड़ सकती है।

बाल सीक्रेट सर्विस के हेड क्वार्टर में पहुंच कर राम ने सारी बात चीफ को बता दी। सुन कर चीफ मुखर्जी प्रसन्न हो उठे।

शाबाश राम, वास्तव में तुम्हारी योजना और कारगुजारी प्रशंसनीय है। मुझे विश्वास है, अब मौत का दूत ज्यादा समय तक कानून को धोखा नहीं दे पायेगा और शीघ्र ही पकड़ा जायेगा।

चीफ, हमें किसी समय भी पुलिस फोर्स की आवश्यकता पड़ सकती है।

चिन्ता मत करो, मैं पुलिस कमिश्नर से आज ही बातें करके सब व्यवस्था कर दूंगा।

फिर आवश्यक बातें करने के पश्चात राम घर वापस लौट पड़ा।

उधर अड्डे पर लौटने पर जे.के. की मुलाकात अपने बॉस से हुई। जे.के. ने कालिया उर्फ रहीम के बारे में मिली मालूमात से उसे अवगत कराया।

हुम्म— तो तुम्हारे कथनानुसार वह छोकरा काम का है?

यस बॉस।

बिल्कुल करो, और उसे सख्त निर्देश दो कि वह जल्द-से-जल्द अपना काम पूरा करे। एक तरफ पुलिस और उन दोनों शैतान छोकरों राम-रहीम ने परेशान कर रखा है तो दूसरी तरफ इस छोकरी ने।
फिर आवश्यक निर्देश देने के बाद बॉस वापस लौट गया।

बॉस के जाने के पश्चात् जे.के. ने रहीम को अपने पास बुलवा भेजा।
तुम्हारे लिए यह खुशखबरी है चेले कि बॉस ने तुम्हें अपने दल में शामिल कर दिया है।
बॉस..?
वहां पहले से ही कुछ और लड़के भी मौजूद थे।

हां चेले, मैं तुम्हारा गुरू जरूर हूं, लेकिन मेरा गुरू मेरा बॉस मौत का दूत है, जिसका चेहरा आज तक न मैंने देखा है, न किसी और ने।
ओह! तो क्या आप मुझे अपने गुरू से नहीं मिलायेंगे।

वक्त आने पर जरूर मिलाऊंगा, फिलहाल तुम इनसे मिलो।
लगता है इन्हें मुझ पर विश्वास हो चुका है। शायद राम की गोट फिट बैठी है।

ये हैं मुन्ना, रघु, शेरू और जानी। अब तुम्हें इन्हीं के साथ काम करना होगा।
ओ.के. उस्ताद!

और यह है कालिया, तुम्हारा नया साथी।
नये धन्धे के लिये बधाई।

लेकिन उस्ताद! काम के विषय में तो तुमने बताया नहीं।
काम तुम्हें यही छोकरे समझा देंगे, लेकिन नये होने के नाते तुम्हें जरा सावधान रहना होगा।

फिर जे.के. अन्य लड़कों की ओर मुड़ कर बोला-
मुन्ना, आज रात के लिये तुमने कौन-सा इलाका अथवा स्थान चुना है।
रेलवे स्टेशन उस्ताद!

बहुत बढ़िया, लेकिन जरा सावधान रहना। पुलिस का खतरा आजकल बहुत बढ़ गया है।
पता नहीं कौन-सा चक्कर चलायेंगे ये रेलवे स्टेशन पर। राम को सूचित करना होगा।
तुम निश्चिंत रहो उस्ताद।

रहीम अपने नये साथियों के साथ एक अन्य कमरे में पहुंचा।
आओ दोस्त, मिलने की खुशी में एक-एक जाम हो जाये।
जरूर, लेकिन पहले बाथरूम।

वह उस तरफ रहा, तब तक हम जाम तैयार करते हैं।
ठीक है।

बाथरूम में प्रविष्ट हो रहीम ने घड़ीनुमा ट्रांसमीटर पर पुन: राम से सम्पर्क स्थापित किया और उसे सारे हालातों से अवगत करा दिया, फिर अंत में बोला—
मेरा विचार है कि वे यात्रियों की जेबों पर हाथ साफ करने का इरादा रखते हैं।

दूसरी ओर राम सबकुछ सुनकर गम्भीर हो उठा।
खैर, मामला जो भी हो मैं पुलिस फोर्स के साथ आज रात वहीं मौजूद रहूंगा।
लेकिन राम भइया, उन पर हाथ मत डाल बैठना, वरना मेरी पोजीशन इनकी निगाहों में संदिग्ध हो जाएगी।

ठीक है, क्या तुम्हें अड्डे के बारे में कुछ जानकारी हो सकी?
नहीं, लेकिन शायद आज रात बाहर निकल कर कुछ मालूम हो जाये।
फिर आवश्यक बातें करने के पश्चात् दोनों ने सम्पर्क तोड़ दिया।

रहीम से सम्बन्ध विच्छेद कर राम ने घड़ी को पूर्ववत् किया, फिर फोन पर चीफ से बातचीत करने लगा।
मैं चाहता हूं चीफ कि रात आप भी मेरे साथ स्टेशन पर मौजूद रहें। पुलिस को फिलहाल साथ न ही लें तो उचित रहेगा।
ठीक है।
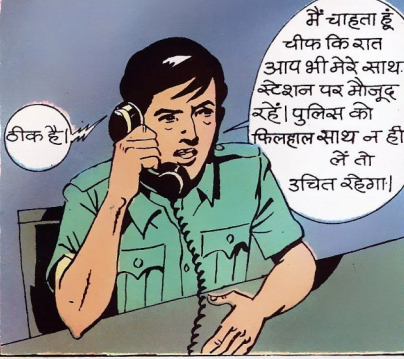
इधर एक सुप्रसिद्ध होटल में—
क्या बात है राजेश, आज तुम कुछ परेशान से हो।
नहीं, ऐसी बात नहीं है प्रिय—दर असल कल मुझे कुछ सीक्रेट पेपर लेकर शहर से बाहर जाना है। उसी के लिये सोच रहा था।

वह आदमी था मिलिट्री का एक अफसर मेजर राजेश—और लड़की थी उसकी प्रेयसी सलमा।
जाओ, मैं तुमसे नहीं बोलती, हर समय काम ही काम। कभी मेरे बारे में भी कुछ सोचा है।
अरे—तुम तो नाराज हो गयीं
सलमा ने अभिनय तो रूठने का किया था, जबकि सीक्रेट पेपर का नाम सुनकर वह मन ही मन चौकन्नी हो उठी थी।

नाराज न होऊं तो और क्या करूं, अब सीक्रेट पेपर के बहाने तुम फिर मुझसे न जाने कब तक के लिये जुदा हो जाओगे।
बिल्कुल गलत, यह जुदाई लम्बे समय के लिए नहीं केवल तीन-चार दिन के लिए होगी।

कल मैं यहां से सीक्रेट पेपर लूंगा और रामगढ़ जाकर हैड-क्वार्टर के सुपुर्द कर दूंगा, ज्यादा से ज्यादा चौथे दिन ठीक तुम्हारे सामने होऊंगा।
क्या सच?

बिल्कुल सच प्रिय, चलो अब चलते हैं।
चलो—मुझे भी आज घर जरा जल्दी पहुंचना है।

चिन्ता मत करो प्रिय। रामगढ़ से लौटने के पश्चात् तुम्हारे पिताजी से बातें करके तुम्हारे घर पहुंचने की यह जल्दी भी दूर कर दूंगा।
मैं भी तुमसे यही कहना चाहती थी राजेश। छुप-छुपकर मिलना अब अच्छा नहीं लगता।
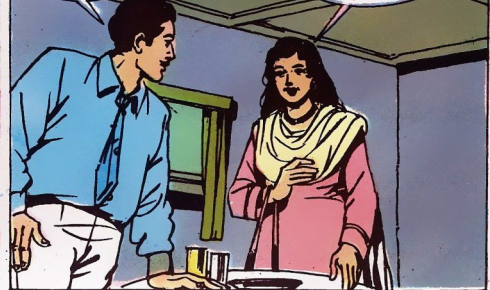
अरे, मैं तो तुमसे यह पूछना ही भूल गयी कि आखिर तुम रामगढ़ कैसे सीक्रेट पेपर लेकर जा रहे हो।
जरा धीरे बोलो, वे पेपर हमारे देश के कुछ गुप्त फौजी अड्डों से सम्बंधित हैं।
ओह!
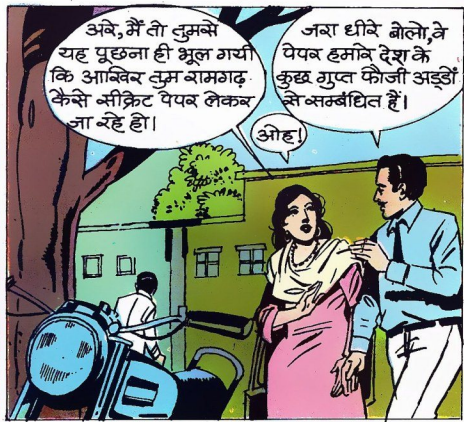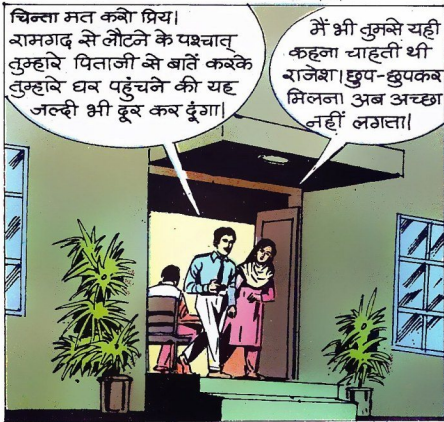
उसके बाद राजेश सलमा से विदा ले मोटरसाइकिल पर सवार हो एक तरफ चल पड़ा।

ऊंह--कल--! राजेश, अब तुम शायद ही रामगढ़ पहुंच पाओ!

फिर सलमा एक टैक्सी में सवार होकर अपने फ्लैट की ओर चल पड़ी।
घर पहुंचकर बॉस को सूचित करूंगी तो वे जरूर प्रसन्न होंगे।
TRISHUL-

सलमा ने जैसे ही अपने फ्लैट के भीतर कदम रखा, वैसे ही एक तरफ रखे फोन की घंटी बज उठी।
ट्रिन--ट्रिन--ट्रिन
ओह, फोन! शायद बॉस का ही हो।

हैलो, मैं सलमा बोल रही हूं।
मैं दिलावर तुम क्या करती फिर रही हो--बॉस तुमसे सख्त नाराज हैं।

बॉस के लिये खुशखबरी है• दिलावर—सुनो—!
फिर सलमा राजेश से हुई आज की बातचीत का वर्णन करने लगी।
सब कुछ सुनने के पश्चात् दूसरी ओर से दिलावर ने प्रसन्नता भरे स्वर में कहा—
खबर अच्छी है। सचमुच बॉस खुश होंगे—लेकिन सुनो सलमा, काम हर कीमत पर हो जाना चाहिए, वरना...!
मैं समझ गयी! तुम चिन्ता मत करो।
गुड--!

इधर बदमाशों के अड्डे पर उसी रात ठीक आठ बजे-
चलो सब इसमें सवार हो जाओ, निश्चित स्थान पर तुम्हें उतार दिया जायेगा।
???
ओ.के मास्टर।

इस अन्डरग्राउंड अड्डे पर गाड़ी—? लगता है इस अड्डे को भीतर-ही-भीतर वैज्ञानिक तरीके से तैयार किया गया है। अफसोस, अभी तक पूरे अड्डे को देखने का कोई मौका नहीं मिला।

जब चारों लड़के उस बन्द गाड़ी में सवार हो गये।
क्यों चेले, तुम खड़े-खड़े क्या सोच रहे हो-चलो जल्दी से सवार हो जाओ।
ओह-हाँ!
फिर रहीम ने भी गाड़ी में सवार होने में देर नहीं लगाई।

वह बन्द गाड़ी उन्हें लेकर एक तरफ दौड़ पड़ी। गाड़ी किस मार्ग से होकर जा रही थी, यह रहीम न जान सका, क्योंकि गाड़ी का पिछला हिस्सा चारों ओर से बन्द था।

राम का अनुमान ठीक ही निकला। ऐसी गाड़ी को ले आने का मतलब है, ये लोग अपने अड्डे का किसी को पता नहीं लगने देना चाहते। फिर भी मौका पाकर इनसे मालूम करने की कोशिश करूंगा।

काफी समय तक लगातार दौड़ते रहने के पश्चात् गाड़ी रुकी और एक व्यक्ति ने बाहर से द्वार खोल दिया।
चलो—सब बाहर निकल आओ।

अन्य लड़कों के साथ रहीम भी बाहर निकला।
सुनो, स्टेशन यहां से पास ही है—ठीक ग्यारह बजे मैं तुम लोगों का यहीं इन्तजार करूंगा।
लेकिन चचा, आज इतनी जल्दी क्यों, और दिनों तो...।
यह जगह तो वही है, जहां पर जे.के. ने मेरी आंखों पर पट्टी बांधी थी।

पुलिस का खतरा बहुत बढ़ गया है, इसलिए बॉस ने ऐसा आदेश दिया है।
ओह—बड़े सतर्क हैं ये लोग।
फिर ठीक है चचा—अच्छा हम चलते हैं।
चलो दोस्तो।

कुछ देर बाद वे पांचों रेलवे स्टेशन के एक प्लेट—फार्म पर थे।
चारों तरफ फैल कर अपने-अपने शिकार की तलाश करो—ठीक एक घन्टे बाद हम बाहर मिलेंगे।
पता नहीं राम कहां है?
ओ.के.।

सभी इधर-उधर भीड़ में खो गये और ऐसे आदमी की तलाश करने लगे, जिसकी जेब आदि को आसानी से साफ कर सकें।
लेकिन रहीम, राम की तलाश में था।

राम की खोज में रहीम इधर-उधर भटक ही रहा था कि तभी एक लड़का आकर उससे टकराया—
ऐ-अन्धे हो क्या?

वह राम था, जो उस समय मेकअप में था।
दिखाई नहीं देता तो कहो, एक हाथ में आंखें खोल दूंगा।
शी-शी-चीखो मत। यह मैं हूं राम।

ओह! राम भइया।
बोलो मत, चुपचाप मेरे पीछे चले आओ।

रहीम, राम के पीछे चलता हुआ एक ऐसे स्थान पर पहुंचा जो सुनसान था। वहां चीफ मुखर्जी भी छद्मवेश में मौजूद थे।
TRISHUL
किसी को शक तो नहीं हुआ राम।
ओह, चीफ!
नो चीफ!

रहीम ने सारी स्थिति से उन्हें अवगत कराया और यह भी बताया कि ठीक ग्यारह बजे उन्हें कहां मिलना है। अन्त में वह बोला—
अफसोस यही है चीफ कि अभी तक मैं उनके अड्डे और वहां तक पहुंचने के मार्ग के विषय में कुछ भी नहीं जान सका।
ओह-!

सबकुछ जानने-सुनने के पश्चात् चीफ मुखर्जी बोले—
ठीक है, तुम जाओ। यहां ज्यादा देर रुकना तुम्हारे लिये उचित न होगा-हम सोचेंगे कि हमें क्या करना है?
ओ.के.!
और रहीम वापस लौट पड़ा

इधर रहीम एक घण्टे तक व्यर्थ में ही इधर-उधर घूमता रहा और फिर उस स्थान पर पहुंच गया, जहां उन सभी ने मिलना था।

अभी तक कोई नहीं आया। न जाने मुझे खाली हाथ पाकर वे क्या सोचें। कोई बहाना तो करना ही पड़ेगा।

माल तो वास्तव में तगड़ा है, लेकिन इतनी ऊंचाई तक हाथ कैसे जायेगा।
एक बढ़िया उपाय है मेरे दिमाग में।
???
तो जल्दी बताओ न यार।
दो जने पीट्ठू बनेंगे और मैं उन पर चढ़कर खिड़की तक पहुंच जाऊंगा। बाकी दो आसपास नजर रखेंगे।
अति शानदार शेरू, वास्तव में तुम्हारे दिमाग की दाद देनी पड़ेगी।
फिर देर मत करो, चलो शुरू हो जाओ।

फिर शेरू, रघु व मुन्ना चुपचाप खिड़की के नीचे पहुंच गये और रहीम एवं जानी आसपास नजर रखने के लिए चौकन्ने हो गये।
चलो पिट्ठू बनो जल्दी।
दोनों के पिट्ठू बनते ही शेरू लपक कर उनकी पीठ पर चढ़ गया।

दूसरे ही क्षण उसके हाथ बिजली की गति से हरकत में आये।
स्त्री मैगजीन पढ़ने में इतनी तल्लीन थी कि उसे गले से हार निकलने का तुरन्त ही आभास नहीं हो पाया।
काम बन गया, चलो अब भाग निकलो।

परन्तु अभी वे दौड़ते हुए कुछ ही दूर पहुंचे थे कि उन्हें पीछे से स्त्री की चीख सुनाई दी शायद उसे हार के चोरी हो जाने का पता चल गया था।
चोर—चोर—चोर! पकड़ो—पकड़ो—!
तेज दौड़ो और स्टेशन से बाहर निकल चलो। यदि घेर लिये गये तो कचूमर निकाल दिया जायेगा।

किसी तरह वे सकुशल स्टेशन से बाहर निकलने में सफल हो ही गये।
शुक्र है, किसी चक्कर में नहीं फंसे। अब हमें सीधे कोर्ट स्ट्रीट पहुंचना चाहिए।
हां, चलो। आज का माल देखकर बॉस खुश हो जायेंगे।
???

फिर वे उस स्थान पर पहुंचे जहां गाड़ी से उन्हें छोड़ा गया था।
अभी ग्यारह बजने में पन्द्रह मिनट बाकी हैं—अतः इंतजार करना होगा।

लेकिन उनमें से किसी को भी यह नहीं मालूम था कि उन पर चीफ मुखर्जी और बाल एजेण्ट राम की नजर है।
वे लोग तो आ पहुंचे हैं, लेकिन रहीम के कथनानुसार गाड़ी उन्हें लेने नहीं पहुंची।
अभी ग्यारह बजने में पन्द्रह मिनट शेष हैं।

इधर उचित मौका देख रहीम ने बात आरंभ की।
यार, यदि गाड़ी हमें लेने नहीं आई तो?
तो क्या हुआ, अड्डा नम्बर दो पर चले जायेंगे। इसका निर्देश हमें पहले से ही है।

अड्डा नम्बर दो।
हां—तुम नये हो ना, इसलिए तुम्हें नहीं मालूम। आमतौर से हम लोग वहीं एकत्रित होते हैं, यानी हम जैसे सभी सदस्य।

और वहीं से हमें माल बॉस के हवाले करने और रिपोर्ट देने के लिए मुख्य अड्डे ले जाया जाता है। कल रात भी हम वहां गये थे, लेकिन तुम्हारे कारण हमें रोक लिया गया, वरना सुबह हमें अड्डे नम्बर दो पर पहुंचा दिया जाता और वहीं से हम धंधे पर निकलते और वहीं वापस लौट जाते

यह नया रहस्य जानकर रहीम मन-ही-मन आश्चर्यचकित हो उठा।

तो क्या तुममें से किसी को भी मुख्य अड्डे का पता नहीं?

हम ही क्या, मौत के दूत के किसी भी छोकरे सदस्य को उस अड्डे का कोई पता

तब उस्ताद जे.के. व दिलावर आदि...।

उन्हें अड्डे के बारे में तो मालूम है, लेकिन वे भी बॉस व उसके निवास-स्थान के बारे में कुछ नहीं जानते।
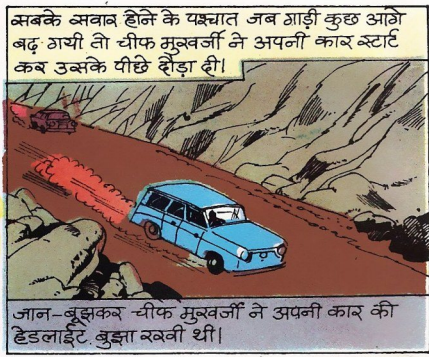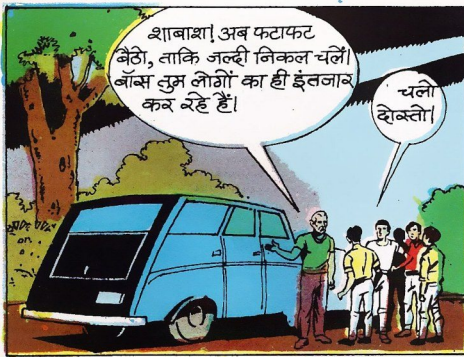
लेकिन जल्दी ही बन्द गाड़ी चालक को पीछा किये जाने का पता चल गया।

ओह—वह कार काफी देर से पीछे लगी हुई है—कहीं पीछा तो नहीं हो रहा—स्पीड बढ़ाऊं।

चीफ मुखर्जी ने भी अपनी गाड़ी की स्पीड बढ़ा दी।

दूसरी ओर से मुख्य अड्डे पर दिलावर ने ट्रांसमीटर पर सन्देश रिसीव किया।

यस दिलावर स्पीकिंग, क्या बात है राखाल?

मेरा पीछा किया जा रहा है! मदद की तुरन्त जरूरत है।

चालक ने जल्दी से दिलावर को सारी स्थिति से अवगत कराया।

पीछा जारी रहा। गाड़ी का चालक सुभाष मार्ग और लारेंस रोड की गलियों में इधर-उधर अपनी गाड़ी घुमाता रहा।

ठीक दस मिनट बाद जब स्टेशन वैगन का चालक चीफ मुखर्जी व राम को चकमा देकर एक गली से निकलकर मुख्य सड़क पर आया तो उसे अपने आगे एक माल वाहक ट्रक धीमी गति से दौड़ता हुआ दिखाई दिया।
ओह हरी बत्ती—मदद आ पहुंची है।
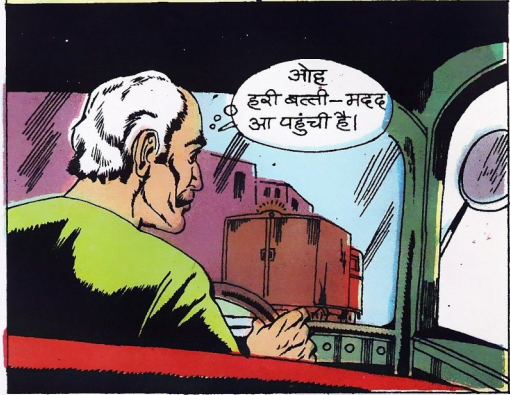
तभी उस विशाल ट्रक का पिछला हिस्सा खुल गया।
अन्दर आने का संकेत है।

फिर उसमें से एक मोटी व फौलादी चद्दर बाहर निकली और सड़क को छूने लगी।
स्पीड बढ़ाऊं!

शखाल तेज गति के साथ गाड़ी को उस फौलाद-नुमा सड़क पर चढ़ाता ले गया।

दूसरे ही क्षण उसकी गाड़ी उस विशाल माल वाहक ट्रक के भीतर थी।
गाड़ी के भीतर पहुंचते ही पहले फौलादी प्लेट भीतर सरकी, फिर द्वार बन्द हो गया।

जब चीफ मुखर्जी की गाड़ी पीछा करती हुई उस सड़क पर पहुंची तो सिवाए उस विशाल ट्रक के उन्हें और कोई गाड़ी वहां नहीं दिखाई दी।
अरे–वह स्टेशन वैगन कहां गई?
उस ट्रक ड्राइवर से पूछते हैं। शायद कुछ बता सके!

ट्रक को रोक उन्होंने ड्राइवर से पूछा—
क्यों भाई, यहां से नीले रंग की किसी स्टेशन वैगन को तुमने जाते देखा है?
नहीं साहब!
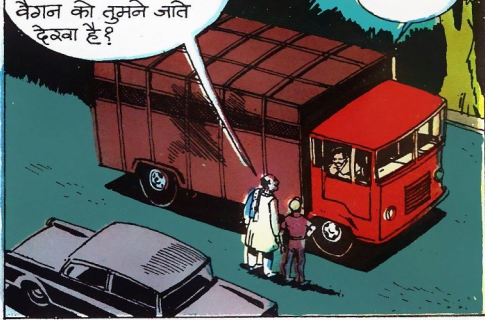
ट्रक के आगे बढ़ जाने के पश्चात्—
लगता है कम्बख्त चकमा दे गया।
हां, अब वापस लौटने के सिवाय और कोई चारा नहीं।

इधर कुछ समय पश्चात मौत के दूत के मुख्य अड्डे पर—
शाबाश छोकरो, आज वास्तव में तुमने बहुत लम्बा हाथ मारा है।

तब स्टेशन वैगन के चालक रखवाल ने पीछा करने वाली बात कह सुनाई।
वह तो गनीमत थी बॉस कि सही समय पर मदद पहुंच गयी, वरना शायद आज मैं छोकरों समेत पुलिस के चुंगल में फंस गया होता।
ओह...

...लेकिन पुलिस को तुम लोगों की भनक कैसे लग गयी?
यह बात तो मेरी भी समझ में नहीं आ रही है बॉस!

खैर छोड़ो, जाओ और जाकर मौज मस्ती लो। तुम लोगों से मैं बहुत खुश हूं। आज का दिन हमारे लिए बहुत शुभ रहा, यदि भाग्य ने साथ दिया तो कल फौजी सीक्रेट पेपर भी हमारे पास होंगे— हा—हा—हा—!
फौजी सीक्रेट पेपर? उफ! जरूर कोई गहरा चक्कर है।

अगले दिन सैनिक छावनी में—
यह बैग आपको रामगढ़ हैडक्वार्टर फील्ड मार्शल मि. मल्होत्रा तक पहुंचाना है मेजर!
यस सर!

इस सील बन्द बैग में क्या है? और उसकी क्या महत्ता है, यह आप अच्छी तरह जानते हैं।

अपने ही देश के कुछ दुश्मन, अपने देश के महत्वपूर्ण राज दुश्मन देश को सप्लाई कर रहे हैं। अतः आपको पूरी तरह सावधान रहना है। यदि ये पेपर दुश्मन के हाथ लग गये तो अनर्थ हो जायेगा।
आप निश्चिंत रहें सर!

मेरे जीते जी दुश्मन इसे छू भी नहीं सकते।
गुड! अब आप जा सकते हैं। आपको रामगढ़ किस तरह पहुंचना है, यह मैं आपको अच्छी तरह समझा चुका हूं। विश यू गुड लक।

मेजर राजेश बैग लेकर सैनिक छावनी से बाहर निकला।
देखो, उसने टैक्सी रोकी। सलमा को सतर्क करो।
टैक्सी

रेलवे स्टेशन।
अच्छा साहब।

एक सुनसान स्थान पर-
राजेश टैक्सी में आ रहा है, तैयार हो जाओ।
ठीक है, मैं तैयार हूं।

कुछ देर बाद सलमा को दूर से एक टैक्सी आती दिखाई दी।
उसमें राजेश ही होगा।

जब टैक्सी चालक ने सड़क के बीचों-बीच एक लड़की को खड़े टैक्सी को रोकने का संकेत करते देखा—
साहब, एक लड़की लिफ्ट मांग रही है।
कोई मुसीबत की मारी लगती है—बिठा लो।

ड्राइवर ने जब टैक्सी सलमा के निकट ले जाकर रोकी तो पिछली सीट पर बैठा राजेश उसे देखकर चौंक उठा।
अरे! सलमा तुम!
अरे- तुम- राजेश!

द्वार खोल राजेश ने सलमा को अपने साथ बिठाया। ड्राइवर ने गाड़ी पुनः दौड़ा दी।
तुम इस सुनसान स्थान पर कैसे?
बाद में बताऊंगी, लेकिन तुम कहां जा रहे हो?

फिलहाल रेलवे स्टेशन, और वहां से रामगढ़! चक्कर मैं तुम्हें पहले ही बता चुका हूं।
समझ गयी। महत्वपूर्ण कागजातों को पहुंचाने के लिए।

बिल्कुल ठीक समझी। बस वहां से लौट कर सीधा तुम्हारे पिता से मिलूंगा। हां, अब बताओ इस वीरान स्थान पर तुम कैसे पहुंची?
जरूर- तो सुनो।

और बिजली की फुर्ती के साथ सलमा ने अपने पर्स से एक नन्हा-सा रिवाल्वर निकाल कर राजेश के सीने पर तान दिया।
मैं तुम्हारे ही चक्कर में यहां आई थी। उन्हीं कागजातों को हासिल करने के लिये, जिन्हें तुम रामगढ़ पहुंचाने जा रहे हो।
ओह- धोखा!

ड्राइवर गाड़ी रोको।
नहीं ड्राइवर, ऐसी मूर्खता न करना

राजेश पर रिवाल्वर ताने देख ड्राइवर घबरा उठा।
म...मैडम-यह आप...!
चुपचाप ड्राईविंग करते रहो- वरना तुम्हारी खोपड़ी में सुराख हो जायेगा।

धोखेबाज औरत, अब मैं समझा। तुम दुश्मन से मिली हुई हो और उसे हमारे गुप्त राज भेज रही हो, और उन गुप्तराजों को प्राप्त करने के लिए ही तुम मेरे साथ प्रेम का नाटक कर रही थीं।

समझे तो ठीक, लेकिन बहुत देर से समझे–मेरे पिता से मिलना चाहते थे ना? तो जाओ, वे स्वर्ग या नर्क में कहीं भी तुम्हारा इंतजार कर रहे होंगे।
धांय–धांय!
आह–मक्कार युवती!
और राजेश के प्राण पखेरू उड़ गये।

सलमा ने बैग पर कब्जा किया।
ड्राइवर गाड़ी रोको!
ज... ज... जी..!

ड्राइवर ने घबराकर तुरन्त गाड़ी रोक दी। सलमा उतरकर भयानक स्वर में ड्राइवर से बोली–
तुम्हारी भलाई इसी में है कि चुपचाप यहां से दफा हो जाओ।
ज...जी–ब... बहुत अच्छा।

अपनी जान बचती देख ड्राइवर ने पूरी गति से गाड़ी को दौड़ा दिया।
मूर्ख–कितनी ही तेज क्यों न भागो। मौत की गति तुम्हारी गाड़ी से ज्यादा तेज साबित होगी।

और अभी टैक्सी ज्यादा दूर पहुंची भी न थी कि एक भयानक विस्फोट के साथ उसके परखच्चे उड़ गये।
धड़ाम
टाईम बम ने बाकी का काम पूरी ईमानदारी से पूरा किया–अब उनकी लाशों को भी कोई नहीं पहचान पायेगा।

ड्राइवर की मौत के साथ अब यह राज भी कोई नहीं जान पायेगा कि राजेश के साथ यह दुर्घटना कैसे घटी और सीक्रेट पेपर कहां गये।

कुछ ही देर बाद–
अपने ही साथी आ रहे लगते हैं।

आनेवाली कार सलमा के निकट आकर रुकी।
क्या रहा?
सफलता।
फिर सलमा ने सारा किस्सा कह सुनाया।

सबके जाने के बाद मौत का दूत भी उस कमरे से निकला और एक अन्य कमरे में पहुंच गया। वहां यन्त्रों का जाल सा बिछा हुआ था। वह एक शक्तिशाली ट्रान्समीटर पर किसी देश से सम्पर्क स्थापित करने लगा।

हैलो–हैलो–मौत का दूत स्पीकिंग, वांटिंग कामरेड चुंग–चूं।

फिर राम चीफ को अपनी योजना बताने लगा।

शाबाश राम, वास्तव में तुम्हारी योजना बहुत शानदार है, लेकिन

यह खतरा तो मोल लेना ही होगा चीफ, लेकिन आप

इधर होटल श्री स्टार रूम नम्बर दस में—

ठीक दस बजे मौत के दूत का

तभी कॉल बेल बजी—
ट्रिन--ट्रिन--ट्रिन
ओह! शायद मौत के दूत का आदमी हो, लेकिन इतनी जल्दी।

लेकिन जैसे ही उसने दरवाजा खोला—
धड़ाक!
उफ्!

और जब तक फूचिंग सम्भलता—
खबरदार, हिलने की कोशिश मत करना।
बाप रे! पुलिस!

लेकिन रात के ठीक दस बजे जब दिलावर होटल थ्री स्टार के रूम नम्बर दस में पहुंचा—
परिचय कोड
काला गुलाब!

ठीक है, मैं तुम्हारा ही इंतजार कर रहा था।
तो फिर आइये मेरे साथ मि. फूचिंग! बॉस आपका ही इंतजार कर रहे हैं।
चलो।

दिलावर फूचिंग को लेकर मुख्य अड्डे पर पहुंचा।
वेलकम मि॰ फूचिंग, आने में कोई तकलीफ तो नहीं हुई?
बिल्कुल भी नहीं मि॰ मौत के दूत। वे कागजात कहाँ हैं?
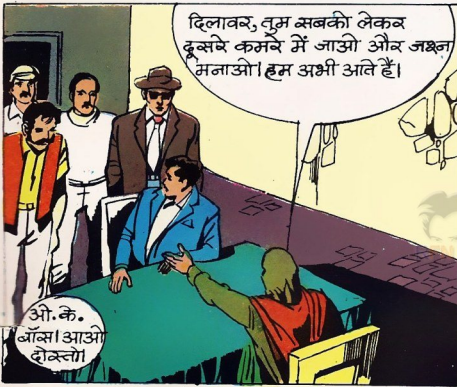
यह लीजिए, मैंने अपना वायदा पूरा किया।
बहुत खूब।

हम भी अपना वायदा निभायेंगे, लेकिन इसकी कीमत अदा करने से पहले मैं आपसे अकेले में कुछ विशेष एवं गुप्त बातें करना चाहता हूं।
अवश्य

दिलावर, तुम सबको लेकर दूसरे कमरे में जाओ और जश्न मनाओ। हम अभी आते हैं।
ओ.के. बॉस। आओ दोस्तो।

सबके जाने के पश्चात्-
हां-अब कहिये मि॰ फूचिंग! आप क्या कहना चाहते थे। अरे-आप खड़े क्यों हो गये, बैठिये ना?

लेकिन फूचिंग ने कुछ कहने के बजाये फुर्ती से जेब से रिवाल्वर निकाल कर उस पर तान दिया।
खबरदार मि॰ मौत के दूत, अपने स्थान से हिलने की चेष्टा मत करना, वरना पूरी छः गोलियां तुम्हारे सीने में उतर जायेंगी।
य... यह- इसका क्या मतलब हुआ मि॰ फूचिंग।

मैं फूचिंग नहीं, राम हूं- लो देखो।
म... मेकअप।

चीफ मुखर्जी और पुलिस फोर्स फूचिंग उर्फ राम का होटल थ्री स्टार से ही पीछा करते हुए वहां तक पहुंचे थे, जिसका दिलावर को पता ही नहीं चला था। यह राम की ही योजना थी।

तुम्हारी भलाई इसी में है कि हमें अपने बॉस के पास ले चलो।

म..मैं तैयार हूं।

लेकिन जैसे ही मौत के दूत ने गुप्त बटन दबाकर गुप्त द्वार खोला, एक जबरदस्त घूंसा उसके चेहरे पर पड़ा।

घूंसा मारने वाला गुप्त मार्ग के दूसरी ओर खड़ा रहीम था, जो वहां के तमाम मार्गों को अब तक जान चुका था।

फिर यम के बेटे राम-रहीम अपने देश के दुश्मन मौत के दूत के लिये साक्षात यमदूत बन गये।

कुछ देर बाद ही बॉस बेसुध-सा फर्श सूंघ रहा था।

और मौत के दूत के लाख मुंह छुपाने के बावजूद भी रहीम ने उसकी नकाब उलट दी, लेकिन नकाब उलटने के पश्चात् जो चेहरा उनके सामने आया, उसे देखकर वे भौंचक्के से रह गये।

क्या? नगर के सेठ और धर्मात्मा करोड़ीमल!

उफ! बच्चों के मसीहा सेठ करोड़ी मल!!!

गोयल ऑफसैट वर्क्स, दूरभाष : 7211428

स